सीसीई आदर्श प्रश्नपत्र–3

हिंदी : कोर्स 'ए'

द्वितीय सत्र (संकलित परीक्षा-II)

(*हल सहित*)

कक्षा : दसवीं

समय : 3 घंटे *पूर्णांक : 90*

सामान्य निर्देश :

(i) इस प्रश्नपत्र के चार खंड हैं–'क', 'ख', 'ग' और 'घ'।

(ii) चारों खंडों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड 'क'

अपठित गद्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

प्रत्येक सुंदर प्रभात सुंदर चीज़ें लेकर उपस्थित होता है, पर यदि हमने कल तथा परसों के प्रभात से लाभ नहीं उठाया तो आज के प्रभात से लाभ उठाने की हमारी शक्ति क्षीण होती जाएगी और यही रफ़्तार रही तो फिर हम इस शक्ति को बिल्कुल ही गँवा बैठेंगे। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है : खोई हुई संपत्ति प्राप्त की जा सकती है, गँवाया हुआ स्वास्थ्य लौटाया जा सकता है, परंतु नष्ट किया हुआ समय सदा के लिए चला जाता है। वह बस स्मृति की चीज हो जाता है और अतीत की एक छाया-मात्र रह जाता है। संसार के महान विचारकों को चिंता रहती थी कि उनका एक क्षण भी व्यर्थ न चला जाए। हमको भी अमूल्य समय को नष्ट होने से बचाने के लिए कुछ भी उठा न रखना चाहिए। महान विचारक समय के छोटे-छोटे टुकड़ों को बचाकर जिस तरह महान हुए, हमको भी उनकी भाँति ही समय का मूल्य जानना चाहिए।

1. 'प्रत्येक सुंदर प्रभात' का तात्पर्य है ____________। (1)

(क) सुंदर वस्तुओं की प्राप्ति (ख) सूर्योदय का समय

(ग) सुनहरा अवसर (घ) जीवन के नए क्षण

2. कौन-सा कथन असत्य है ? (1)

(क) बीता समय लौट सकता है। (ख) नष्ट स्वास्थ्य पाया जा सकता है।

(ग) खोई हुई सम्पत्ति मिल सकती है। (घ) भूली हुई जानकारी पाई जा सकती है।

3. अमूल्य समय को नष्ट होने से कैसे बचाया जा सकता है ? (1)

(क) महान विचारकों के बारे में पढ़कर (ख) प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करके

(ग) सपने देखकर (घ) कल्पना जगत में विचरण करके

4. संसार के महान विचारकों को किस बात की चिंता रहती थी ? (1)

(क) संसार के लोगों की (ख) अपने स्वास्थ्य की

(ग) अपनी प्रसिद्धि की (घ) उनका एक क्षण भी व्यर्थ न चला जाए

5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है ____________। (1)

(क) समय का महत्त्व (ख) महान विचारक

(ग) सुंदर प्रभात (घ) समय और मुनष्य

उत्तर– 1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

कई लोग असाधारण अवसर की बाट जोहा करते हैं। साधारण अवसर उनकी दृष्टि में उपयोगी नहीं रहते। परंतु वास्तव में कोई अवसर छोटा-बड़ा नहीं है। छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग करने से, अपनी बुद्धि को उसी में भिड़ा देने से, वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है। सर्वोत्तम मनुष्य वे नहीं हैं, जो अवसरों की बाट देखते रहते हैं, परंतु वे हैं जो अवसर को अपना दास बना लेते हैं। हमारे सामने हमेशा ही अवसर उपस्थित होते रहते हैं। यदि हम में इच्छा-शक्ति है, काम करने की ताकत है, तब तो हम स्वयं ही उनसे लाभ उठा सकते हैं। अवसर न मिलने की शिकायत कमज़ोर मनुष्य ही करते हैं। जीवन अवसरों की एक धारा है। स्कूल, कॉलेज का प्रत्येक पाठ, परीक्षा का समय, कठिनाई का प्रत्येक पल, सदुपदेश का प्रत्येक क्षण एक अवसर है। इन अवसरों से हम नम्र हो सकते हैं, ईमानदार हो सकते हैं, मित्र बना सकते हैं, उत्तरदायित्वों का मूल्य समझ सकते हैं और इस प्रकार उच्च मनुष्यता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे अनेक लोग हैं जो अवसर को पकड़कर करोड़पति हो गए। परंतु अवसरों का क्षेत्र यहाँ समाप्त नहीं हो जाता। अवसर का उपयोग करके हम इंजीनियर, डॉक्टर, कला-विशारद, कवि और विद्वान् भी बन सकते हैं। यद्यपि अवसरों के उपयोग से धन कमाना अच्छा काम है, परंतु धन से भी कहीं श्रेष्ठ कार्य सामने है। धन ही जीवन के प्रयत्नों का अंत नहीं है, जीवन के लक्ष्य की चरम सीमा नहीं है। अवसरों के सदुपयोग से हम सर्वदृष्टि से महत्त्वपूर्ण इंसान बन सकते हैं।

1. छोटा अवसर भी कब बड़ा और असाधारण हो जाता है ? (1)

(क) जब हम में उससे लाभ उठाने की क्षमता हो।

(ख) जब हम बड़े अवसर की प्रतीक्षा में उसकी उपेक्षा नहीं करते।

(ग) जब आलस्य के कारण उसके उपयोग से वंचित नहीं होते।

(घ) जब हम पूरी लगन से उसका भरपूर उपयोग करते हैं।

2. अवसर का लाभ कैसे उठाया जा सकता है ? (1)

(क) अवसर की राह देखने से।

(ख) अनेक अवसरों में उपयोगी अवसर की पहचान से।

(ग) कार्य करने की उत्कट लालसा एवं शक्ति के भरपूर उपयोग से।

(घ) कठिनाइयों को सहन करने से।

3. जीवन को अवसरों की एक धारा क्यों कहा है ? (1)

(क) धारा जीवन को विनाश की ओर बहा सकती है।

(ख) जीवन की जिम्मेदारियों का बोध करा सकती है।

(ग) जीवन में प्रत्येक क्षण अवसर प्राप्त होते रहते हैं।

(घ) धारा जीवन में अच्छे मित्र दे सकती है।

4. कौन-सा श्रेष्ठ कार्य है जो धन से भी बढ़कर है ? (1)

(क) इंजीनियर या डॉक्टर बनना (ख) श्रेष्ठ कवि या कलाकार की ख्याति प्राप्त करना

(ग) खेलों में दक्षता हासिल करना (घ) समाज में महान् एवं आदर्श व्यक्ति बनना

5. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक हो सकता है __________। (1)

(क) अवसर और मनुष्य (ख) जीवन : अवसरों की एक धारा

(ग) जीवन में अवसरों का महत्त्व (घ) अवसर और इच्छाशक्ति

उत्तर– 1. (घ) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख)।

अपठित काव्यांश

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

दर्द की परछाइयों के दानवी बंधन हटाना।
छटपटाती ज़िंदगी को चेतना संगीत देना।
विश्व को नवपंथ देना; हारते को जीत देना।।
आदमी हो, बुझ रहे ईमान को विश्वास देना।
मुसकराकर वाटिका में मधुभरा मधुमास देना।
शूल के बदले जगत को फूल की सौगात देना।
जो पिछड़ता हो उसे नवशक्ति देना, साथ देना।।
आदमी हो, डूबते मँझधार में पतवार देना।
थक चला विश्वास साथी, आस्था आधार देना।
क्रांति का संदेश देकर राह युग की मोड़ देना।
फिर नया मानव बनाना; रूढ़ियों को तोड़ देना।।
आदमी हो, द्वेष के तूफान को हँसकर मिटाना।
कंठ-भर विषपान करना; किंतु सबको प्यार देना।
मेटना मजबूरियों को; दीन को आधार देना।
खाइयों को पाटना; बिछुड़े दिलों को जोड़ देना।।

1. काव्यांश में बार-बार 'आदमी हो' क्यों कहा गया है ? (1)

(क) ईमानदारी पर बल देने के लिए। (ख) मानवोचित काम करने का आग्रह करने के लिए।
(ग) बुराइयों से बचाने के लिए । (घ) आदमी होने की याद दिलाने के लिए।

2. 'शूल के बदले फूल देना' का तात्पर्य है __________। (1)

(क) मिटते ईमान को विश्वास देना (ख) दुर्बल को नई शक्ति देना
(ग) दुखों के बदले सुख देना (घ) जीवन को आनंद से भर देना

3. 'मँझधार' और 'नाव' प्रतीक हैं __________। (1)

(क) नदी और नाव (ख) मुसीबत और सहारा
(ग) विवशता और सहायता (घ) विवशता और सहयोग

4. कविता में 'खाइयों को पाटना' का अभिप्राय है __________। (1)

(क) गड्ढा भरना (ख) मेल-मिलाप की बातें करना
(ग) गरीबों की सहायता करना (घ) आपसी शत्रुता को मिटाना

5. 'स्नेहबाती' में अलंकार है __________। (1)

(क) अनुप्रास (ख) उपमा
(ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

उत्तर–1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)।

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है ?
मैं कठिन तूफान कितने झेल आया,
मैं रुदन के पास हँस-हँस खेल आया।
मृत्यु-सागर-तीर पर पद-चिह्न रखकर-
मैं अमरता का नया संदेश लाया।

आज तू किसको डराना चाहती है ?
ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है ?
शूल क्या देखूँ चरण जब उठ चुके हैं
हार कैसी, हौसले जब बढ़ चुके हैं।
तेज़ मेरी चाल आँधी क्या करेगी ?
आग में मेरे मनोरथ तप चुके हैं।
आज तू किससे लिपटना चाहती है ?
चाहता हूँ मैं कि नभ-थल को हिला दूँ,
और रस की धार सब जग को पिला दूँ,
चाहता हूँ पग प्रलय-गति से मिलाकर-
आह की आवाज़ पर मैं आग रख दूँ।
आज तू किसको जलाना चाहती है ?
ओ निराशा, तू बता क्या चाहती है ?

1. कवि निराशा को ललकारते हुए अपने बारे में बता रहा है कि ________। (1)
(क) वह परेशानियों से पराजित हुआ है (ख) वह तूफ़ानों से डरा है
(ग) उसको दुखों ने रुलाया है (घ) वह अमरता का संदेश लेकर आया है

2. निराशा किसे डराना चाहती है ? (1)
(क) साहसी कवि को (ख) मननशील पाठक को
(ग) जुझारू वीरों को (घ) निराश व्यक्ति को

3. कवि क्या चाहता है ? (1)
(क) विश्व में प्रलय (ख) इच्छाओं की पूर्ति
(ग) संसार में क्रांति (घ) असीमित अधिकार

4. कविता का मुख्य संदेश है ________। (1)
(क) वीरता (ख) अमरता
(ग) क्रांतिकारिता (घ) आशावादिता

5. 'मृत्युसागर' में अलंकार है ________। (1)
(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) रूपक (घ) उपमा

उत्तर– 1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ग)।

खंड 'ख'

व्यावहारिक व्याकरण

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए– (5 × 1 = 5)
(क) हम आज भी अपने देश पर प्राण न्योछावर करने हेतु तैयार रहते हैं।
(ख) मैं सो रहा था।
(ग) हर्षिता दसवीं कक्षा में पढ़ती है।
(घ) भूषण वीर रस के कवि थे।
(ङ) गाँधीजी ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया।

उत्तर– (क) **हम**–उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।

(ख) **सो रहा था**–अकर्मक क्रिया, संयुक्त क्रिया, भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(ग) **दसवीं**–निश्चित संख्यावाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य का विशेषण।

(घ) **भूषण**–व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, कर्ताकारक।

(ङ) **गाँधीजी**–व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक।

प्रश्न 6. निर्देशानुसार कीजिए– (5 × 1 = 5)

(क) ताजमहल शाहजहाँ ने बनवाया, यह सब जानते हैं। (मिश्र वाक्य बनाइए)

(ख) हमने उसका पत्र पढ़कर सबको उसकी कुशलता का समाचार दिया। (संयुक्त वाक्य बनाइए)

(ग) वह सवेरे उठता है और घूमने चला जाता है। (सरल वाक्य बनाइए)

(घ) जैसे ही वर्षा समाप्त हुई मैच खत्म हो गया। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

(ङ) उसकी कार रुकी और पीछे से ट्रक ने टक्कर मारी। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

उत्तर– (क) यह सब जानते हैं कि शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया।

(ख) हमने उसका पत्र पढ़ा और सबको उसकी कुशलता का समाचार दिया।

(ग) वह सवेरे उठकर घूमने चला जाता है।

(घ) मिश्र वाक्य।

(ङ) संयुक्त वाक्य।

प्रश्न 7. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए– (5 × 1 = 5)

(क) मैं रोटी खाता हूँ। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(ख) अध्यापक द्वारा हमें आज नया पाठ पढ़ाया गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

(ग) मेरे भाई से पतंग उड़ाई जा रही है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

(घ) पक्षी आकाश में उड़े। (भाववाच्य में बदलिए)

(ङ) नौकर कपड़े धोता है। (वाच्य बताइए)

उत्तर– (क) मेरे द्वारा रोटी खाई जाती है।

(ख) अध्यापक ने हमें आज नया पाठ पढ़ाया।

(ग) मेरा भाई पतंग उड़ा रहा है।

(घ) पक्षियों से आकाश में उड़ा गया।

(ङ) कर्तृवाच्य

प्रश्न 8. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए– (5 × 1 = 5)

(क) मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(ख) मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।

(ग) रघुपति राघव राजा राम।

(घ) तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा।

(ङ) ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भर छाछ पे नाच नचावें।

उत्तर– (क) मानवीकरण अलंकार

(ख) रूपक अलंकार

(ग) अनुप्रास अलंकार

(घ) उपमा अलंकार

(ङ) अनुप्रास अलंकार

खंड 'ग'

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज़ इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सजदे, इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज़ के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते हैं–

'मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।' उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा और अपनी झोली से सुर का फल निकालकर उनकी ओर उछालेगा फिर कहेगा, ले जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी।

1. बिस्मिल्ला खाँ को क्या कहा गया है ? (1)

(क) शहनाई वादक (ख) नमाज पढ़ने वाला

(ग) शहनाई की मंगलध्वनि का नायक (घ) मंगलध्वनि का गायक

2. खाँ साहब की पाँचों वक्त की नमाजें किसमें खर्च होती थीं ? (1)

(क) सच्चे सुर की माँग में (ख) नेमत में

(ग) इबादत में (घ) सजदे में

3. 'सजदा' किसे कहते हैं ? (1)

(क) नमाज़ पढ़ने को (ख) रियाज़ करने को

(ग) माथा टेकने को (घ) दुआ माँगने को

4. 'तासीर' शब्द का अर्थ है ? (1)

(क) प्रभाव (ख) असर

(ग) गुण (घ) उपर्युक्त तीनों

5. अमीरुद्दीन को किस बात का यकीन है ? (1)

(क) खुदा उसे अपनी झोली से सुर का फल अवश्य देगा।

(ख) वे एक अच्छे शहनाई वादक बनेंगे।

(ग) उनकी मेहनत रंग लाएगी।

(घ) उन्हें सुर की पहचान मिलेगी।

उत्तर– 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (क)।

अथवा

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

अजमेर से पहले पिता जी इंदौर में थे जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वे समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिसमें से कई तो बाद में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

1. गद्यांश में किसके पिता की ओर संकेत है ? (1)

(क) शीला अग्रवाल के (ख) डॉ. अम्बालाल के

(ग) मन्नू भंडारी के (घ) कॉलेज की प्रिंसिपल के

2. इंदौर में पिता के मान-सम्मान का कारण था ____________। (1)

(क) कांग्रेसी होना (ख) समाज-सुधारक होना

(ग) उपदेशक होना (घ) संवेदनशील होना

3. शिक्षा के प्रति पिता के लगाव का उदाहरण है ____________। (1)

(क) शिक्षा का उपदेश देना (ख) उनका अध्यापक होना

(ग) अपने घर पर विद्यार्थियों को पढ़ाना (घ) उनके विद्यार्थियों का ऊँचे पद पाना

4. पिता के व्यक्तित्व के परस्पर विरोधी गुण हैं ____________। (1)

(क) अहंवादिता और रूढ़िवादिता (ख) उदारता और संकीर्णता

(ग) संपन्नता और निर्धनता (घ) कोमलता और क्रोध

5. दरियादिली का अर्थ है ____________। (1)

(क) उदारता (ख) कृपणता

(ग) सहनशीलता (घ) सम्पन्नता

उत्तर– 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (क)।

प्रश्न 10. 'एक कहानी यह भी' आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए। (4)

उत्तर–सन् 1942 में स्वाधीनता आंदोलन चरम सीमा पर था। सारे परिदृश्य में उबाल आ गया था। प्रत्येक नगर में हड़तालें हो रही थीं, प्रभात-फेरियाँ निकल रही थीं, जलसे हो रहे थे, जुलूस निकल रहे थे। राजनीतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे तथा जमकर बहसें होती थीं। घर के बंधन, स्कूल-कॉलिज के नियमों–सबकी धज्जियाँ उड़ रही थीं। पूरे देश में मर-मिटने की भावनाएँ हिलोरें ले रही थीं।

मन्नू भंडारी की भूमिका–स्वाधीनता आंदोलन के इस दौर में मन्नू भंडारी अजमेर के सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल की थर्ड इयर की छात्रा थीं। लेखिका ने वहाँ छात्राओं का नेतृत्व किया और स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़ीं। उन्होंने विद्यार्थियों के साथ मिलकर पूरे शहर में हड़तालें करवाईं तथा जुलूस भी निकाले। आज़ाद हिंद फौज़ के मुकदमे के समय अजमेर के विद्यार्थियों ने हड़ताल का आह्वान किया। वे मुख्य बाजार के चौराहे पर एकत्रित हो गए। वहाँ मन्नू जी ने जोरदार भाषण दिया, जिसकी खूब सराहना हुई। उनके इशारे पर पूरे कॉलेज की छात्राएँ कक्षाएँ छोड़कर आंदोलन के लिए साथ हो लेती थीं। इस प्रकार मन्नू जी ने स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया।

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (3 × 2 = 6)

(क) **काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे ?**

उत्तर–काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे–

(*i*) काशी में संगीत, साहित्य, अदब की सारी परंपराएँ लुप्त हो रही हैं।

(*ii*) संगतकारों के लिए गायकों के मन में आदर की कमी।

(*iii*) काशी-मक्का महाल से मलाई बरफ गायब होती जा रही है।

(*iv*) देशी घी की बनी कचौड़ी, जलेबी मिलनी कम हो गई।

(ख) **लेखिका मन्नू भंडारी अपनी माँ को अपना आदर्श क्यों नहीं बना सकीं ?**

उत्तर–लेखिका मन्नू भंडारी निम्नलिखित कारणों से अपनी माँ को अपना आदर्श नहीं बना सकीं–

(*i*) माँ अनपढ़ थी।

(*ii*) पति की हर ज्यादती को अपना प्राप्य समझ सहन करती थी।

(*iii*) माँ बच्चों की हर उचित-अनुचित इच्छा पूर्ण करती थी।

(*iv*) माँ दब्बू स्वभाव की थी।

(*v*) माँ ने अपने लिए कुछ नहीं माँगा, बस दिया ही दिया।

(ग) वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है ?

उत्तर–वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' उसे कहा जा सकता है जो अपनी बुद्धि अथवा विवेक से किसी नए तथ्य का दर्शन करता है।

– जो अपनी योग्यता के बल पर किसी नई चीज़ का आविष्कार करे, वही संस्कृत व्यक्ति कहलाने का अधिकारी है। उदाहरण के लिए न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया, अत: वह संस्कृत मानव था।

प्रश्न 12. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– **(5 × 1 = 5)**

यश है न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) कवि के 'भरमाने' का क्या कारण है ?

(ख) प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) कविता में किस यथार्थ के पूजन की बात कही गई है ?

(घ) 'चन्द्रिका में छिपी' का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

(ङ) काव्यांश की भाषा कौन-सी है ?

उत्तर–(क) कवि के भरमाने का कारण है–यश, वैभव, मान, सम्मान तथा धन-सम्पत्ति के पीछे दौड़ना। ये चीजें व्यक्ति को भ्रमित करती रहती हैं।

(ख) व्यक्ति द्वारा स्वयं को प्रभु मानना या बड़प्पन दर्शाना केवल मृगतृष्णा मात्र है। व्यक्ति को अहं के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। इससे कुछ भी हासिल नहीं होता।

(ग) कविता में जीवन के यथार्थ को समझकर उसी को पूजने अर्थात् स्वीकार करने की बात कही गई है। जीवन की वास्तविकता को ही मानना होगा।

(घ) 'चंद्रिका' का शाब्दिक अर्थ है–चाँदनी। कवि ने यहाँ इस शब्द को सुखों के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया है।

(ङ) इस काव्यांश की भाषा 'खड़ी बोली' है।

अथवा

"कितना प्रामाणिक था उसका दु:ख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।"

(क) उपर्युक्त काव्यांश में किस के दुख को प्रामाणिक बताया गया है ? (1)

(ख) लड़की के कन्यादान के अवसर पर माँ को क्या अनुभूति हो रही थी ? (1)

(ग) माँ को अपनी बेटी "अन्तिम पूँजी" क्यों लग रही थी ? (1)

(घ) "लड़की अभी सयानी नहीं थी" से क्या स्थिति प्रकट होती है ? (1)

(ङ) माँ की चिन्ता का मुख्य कारण क्या था ? (1)

उत्तर–(क) काव्यांश में माँ के दुख को प्रामाणिक बताया गया है। कन्यादान के समय माँ का दुख अत्यंत गहरा और वास्तविक था। बेटी के साथ उसकी आत्मीयता थी।

(ख) लड़की के कन्यादान के अवसर पर माँ को दुख की अनुभूति हो रही थी कि मानों वह अपने जीवन की अंतिम पूँजी को दान में दे रही हो।

(ग) माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी इसलिए लग रहीं थी क्योंकि वह उसके सुख-दुख की साथी थी। उसके जाने के बाद माँ को ऐसा लग रहा था कि उसकी अंतिम पूँजी भी चली गई।

(घ) लड़की ने जीवन के सुख-दुखों में केवल सुख ही देखे थे। वह दुखों से अनजान थी और एकदम भोली-भाली एवं सरल थी। वह अभी परिपक्व (सयानी) नहीं हुई थी।

(ङ) माँ की चिंता का मुख्य कारण यह था कि लड़की को विवाह-सुख की अस्पष्ट सी जानकारी भर थी। उसने अब तक घर में स्नेहपूर्ण वातावरण ही देखा-समझा था, अभी उसे दुखों से वास्ता नहीं पड़ा था।

प्रश्न 13. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (5 × 2 = 10)

(क) लक्ष्मण ने वीर योद्धाओं की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

उत्तर–लक्ष्मण ने वीर योद्धाओं की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं–

– वीर योद्धा अपनी वीरता का बखान स्वयं नहीं करते।

– वीर योद्धा युद्ध स्थल में वीरता का प्रदर्शन करते हैं।

– वे शत्रु को सामने देखकर अपनी वीरता की डींगें नहीं हाँकते।

– वीर योद्धा अपशब्दों का प्रयोग नहीं करते, गाली नहीं देते।

– वीर योद्धा धैर्यवान होते हैं।

– वीर योद्धा क्रोध नहीं करते।

(ख) **'क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर ?' कवि का मानना है कि समय बीत जाने पर भी उपलब्धि मनुष्य को आनंद देती है। क्या आप ऐसा मानते हैं ? तर्क सहित लिखिए।**

उत्तर–यह सच है कि उपलब्धि समय पर ही अच्छी होती है, तभी मनुष्य को आनंद की प्राप्ति होती है। कहा जाता है–'का वरषा सब कृषी सुखानें।' पर इसके बावजूद हमें उपर्युक्त सत्य को भी स्वीकारना होगा। व्यक्ति कर्म ही कर सकता है, फल उसके हाथ में नहीं है। यह फल ही उपलब्धि है। हमें उपलब्धि के देर से मिलने पर भी आनंद का अनुभव होना चाहिए। कई बार व्यक्ति किसी अवसर पर पुरस्कार की कामना करता है, पर उसे वह पुरस्कार तब नहीं मिल पाता, अगले वर्ष मिल जाता है। ऐसे में हमें उस उपलब्धि को नकार नहीं देना चाहिए। कई बार हम अति उत्साही हो जाते हैं।

(ग) **'कन्यादान' कविता में आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना ?**

उत्तर–हमारे विचार से माँ ने अपनी लड़की से ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि वह–

– लड़की को शालीन, शिष्ट और व्यवहारकुशल बनाना चाहती थी, अतः उसने लड़की होने की बात कही।

– 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' उसने इसलिए कहा होगा क्योंकि वह उसे पुरुष वर्ग के शोषण से बचाना चाहती थी।

– वह स्वयं एक अनुभवी स्त्री थी, अतः सभी प्रकार की समस्याओं से दो-चार हो चुकी थी। वह पग-पग पर होने वाले शोषण से भली-भाँति परिचित थी।

– वह अपनी बेटी को जीवन के यथार्थ से परिचित कराना चाहती थी।

– वह लड़की को साहसी बनाना चाहती थी।

(घ) **किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले लोग प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर क्यों नहीं पहुँच पाते ?**

उत्तर–किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले लोग प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर इसलिए नहीं पहुँच पाते क्योंकि वे बड़े कलाकार के सहयोगी होते हैं। वे उसके प्रति वफादार बने रहते हैं।

– उनकी आर्थिक स्थिति इतनी सुदृढ़ नहीं होती कि वे धन खर्च करके अपना समूह बना सकें।
– उन्हें अपनी प्रतिभा का समुचित प्रदर्शन करने के अवसर नहीं मिल पाते।
– मुख्य गायक भी अपने स्वार्थवश उन्हें आगे आने का अवसर नहीं देते। वे अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते हैं।

(ङ) 'छाया मत छूना' कविता का संदेश क्या है ?

उत्तर–'छाया मत छूना' कविता के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि जीवन में सुख और दुख दोनों की उपस्थिति होती है। विगत के सुख को याद करके वर्तमान के दुख को और गहरा करना तर्कसंगत नहीं है। कवि के शब्दों में इससे दुख दूना होता है। विगत की सुखद काल्पनिकता से चिपके रहकर वर्तमान से पलायन की अपेक्षा, कठिन यथार्थ से रू-ब-रू होना ही जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए।

यह कविता अतीत की स्मृतियों को भूलकर वर्तमान का सामना कर भविष्य का वरण करने का संदेश देती है। यह कविता बताती है कि जीवन के सत्य को छोड़कर उसकी छायाओं से भ्रमित रहना जीवन की कठोर वास्तविकता से दूर रहना है।

प्रश्न 14. हमारी आज़ादी की लड़ाई में समाज के उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान भी कम नहीं रहा है। 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा' कहानी में ऐसे लोगों के योगदान को लेखक ने किन मूल्यों पर आंकलित किया है ?

(मूल्य आधारित प्रश्न) (4)

उत्तर–हमारी आजादी की लड़ाई में समाज के सभी वर्गों का योगदान रहा है। इसमें समाज के उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान भी बहुत अधिक है। इन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार इस लड़ाई में पूरी तरह से सहयोग दिया और अपने प्राण तक न्योछावर कर दिए। इस कहानी में दो प्रमुख पात्र हैं–टुन्नू और दुलारी। ये दोनों पात्र समाज के उपेक्षित वर्ग से संबंध रखते हैं। इनका काम नाचना-गाना है। समाज अपने मनोरंजन के लिए इनका भरपूर उपयोग करता है, पर उन्हें सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता।

टुन्नू–एक छोटी आयु का लड़का है। वह संगीत प्रेमी है अतः दुलारी को चाहने लगता है। दुलारी से दुत्कार पाकर टुन्नू देश की आजादी की लड़ाई में शामिल हो जाता है। नौ वर्षीय झींगुर से पता चलता है कि 'टुन्नू महाराज को गोरे सिपाहियों ने मार डाला और लाश भी उठाकर ले गए।' टुन्नू ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने वाली टोली में भाग लिया था। टुन्नू को बूट की ठोकर मारी गई। वह तिलमिलाकर जमीन पर गिर गया और उसके मुँह से खून निकल पड़ा। गोरों ने टुन्नू को उठाकर गाड़ी में लाद दिया। अस्पताल जाते हुए उसने दम तोड़ दिया। इस प्रकार उसने देश के लिए अपना बलिदान दे दिया।

दुलारी–यद्यपि दुलारी गायिका थी, फिर भी उसके अंदर देशभक्ति की भावना थी। उसने विदेशी वस्त्रों को एकत्रित करने वाले जुलूस पर नए कपड़ों का बंडल फेंका था।

टुन्नू के मरने की खबर सुनकर दुलारी टुन्नू की दी हुई साड़ी पहनकर उसी स्थान पर जाती है जहाँ टुन्नू ने दम तोड़ा था। वहाँ उसने दर्द भरे स्वर में गाया–'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा, कासो मैं पूछूँ ?''

लेखक ने ऐसे लोगों के योगदान को इन मूल्यों पर आंकलित किया है–

–राष्ट्र के स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी सक्रिय सहभागिता
–राष्ट्र की अस्मिता के साथ जुड़ाव
–राष्ट्र की माँग को स्वीकारना
–संकुचित से व्यापक की प्रेरणा

प्रश्न 15. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (2 × 3 = 6)

(क) लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी ?

उत्तर–जितेन ने लेखिका को 'कवी-लोंग स्टॉक' दिखाया। उसे बताया गया कि यहीं 'गाइड' फ़िल्म की शूटिंग हुई थी तथा यहीं तिब्बत के चीसर-खे-बम्सन ने लेपचाओं के शोमेन कुंजतेक के साथ संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। यहीं लेखिका ने एक कुटिया के भीतर घूमता चक्र देखा। नार्गे ने बताया कि 'यह धर्म चक्र है, प्रेयर व्हील। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।'

इसे देखकर लेखिका को लगा कि चाहे मैदान हो या पहाड़, तमाम वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद इस देश की आत्मा एक जैसी है। लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, अंधविश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ एक समान हैं।

(ख) प्रकृति ने जल-संचयन की व्यवस्था किस प्रकार की है ?

उत्तर—पर्वतों पर बर्फ़ पड़ती है। ये हिम-शिखर एक प्रकार के जल-स्तंभ हैं। प्रकृति सर्दियों में बर्फ़ के रूप में जल संग्रह कर लेती है और जब गर्मियों में पानी के लिए त्राहि-त्राहि मचती है तब ये बर्फ़ शिलाएँ पिघल-पिघल कर जलधारा बनकर नदियों में पहुँचती हैं और हमारे सूखे कंठों को तरावट पहुँचाती हैं। यही प्रकृति की अद्‌भुत जल-संचयन व्यवस्था है।

(ग) टुन्नू कैसे मारा गया ?

उत्तर—टुन्नू उस जुलूस में शामिल था जो विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के लिए निकल रहा था। उक्त जुलूस जब टाउन हॉल पहुँचकर विघटित हो गया तो पुलिस के जमादार अली सगीर ने टुन्नू को जा पकड़ा और उसे गालियाँ दीं। गाली देने का प्रतिवाद करने पर जमादार ने उसे बूट की ठोकर मारी। चोट पसली में लगी। वह तिलमिलाकर ज़मीन पर गिर गया और उसके मुँह से खून निकल पड़ा। पास ही गोरे सैनिकों की गाड़ी खड़ी थी। उन्होंने टुन्नू को उठाकर गाड़ी में लाद लिया। लोगों से कहा गया कि अस्पताल को ले जा रहे हैं। परंतु गाड़ी का पीछा करके पता लगाया गया है कि वास्तव में टुन्नू मर चुका था। रात के आठ बजे टुन्नू का शव वरुणा में प्रवाहित कर दिया गया।

(घ) लेखक हिरोशिमा पर कब कविता लिख सका ?

उत्तर—जब लेखक के मन में विवशता जागी। भीतर की आकुलता बुद्धि के क्षेत्र से बढ़कर संवेदना के क्षेत्र में आ गई ......फिर धीरे-धीरे वह उससे अपने को अलग कर सका और अचानक एक दिन उसने 'हिरोशिमा' पर कविता लिखी—जापान में नहीं, भारत लौटकर, रेलगाड़ी में बैठे-बैठे।

यह कविता अच्छी है या बुरी; इससे उसे मतलब नहीं है। उसके निकट वह सच है, क्योंकि वह अनुभूति-प्रसूत है, यही उसके निकट महत्त्व की बात है।

खंड 'घ'

प्रश्न 16. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए— (5)

(क) **'मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर'**

- सूक्ति का अर्थ व वाणी का महत्त्व
- विभिन्न उदाहरण
- कटु वाणी का नकारात्मक प्रभाव
- मधुर वाणी का सकारात्मक प्रभाव

(ख) **देश के प्रति हमारा कर्तव्य**

- भारत देश
- देश के प्रति कर्तव्य
- आदर्श नागरिक बनना

(ग) **मोबाइल फोन की उपयोगिता**

- जीवन की अनिवार्य आवश्यकता
- फोन की उपयोगिता
- नित्य आते परिवर्तन

उत्तर—

(क) मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर

इस सूक्ति का अर्थ है—मीठे वचन औषधि के समान होते हैं और कड़वे वचन तीर की भाँति चुभते हैं। इस उक्ति में वाणी का महत्त्व समझाया गया है। मीठे वचनों से सभी काम बन जाते हैं जबकि कटु वचन बनते काम को बिगाड़ देते हैं। एक युवक ने जब भाभी को 'कानी भाभी' कहकर पीने को पानी माँगा तो उसे कड़वी बात सुनने को मिली और जब उसने 'प्यारी भाभी' कहकर पानी माँगा तो उसे पानी के जगह शरबत पीने को मिला। कटु वाणी का सदा नकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। इसके विपरीत मधुर वाणी का सकारात्मक प्रभाव होता है। हमें किसी से कुछ माँगते समय मीठी वाणी का प्रयोग करना चाहिए। मीठी वाणी से बहुत प्रभाव पड़ता है। मीठी वाणी दवा के समान काम करती है और कड़वी वाणी विष से भरे तीर जैसी चुभती है। अतः हमें सदा मधुर वाणी में ही अपनी बात कहनी चाहिए।

(ख) देश के प्रति हमारा कर्तव्य

मेरे देश का नाम भारत है।

भारत के प्रति हमारा कर्तव्य है कि हम इसकी उन्नति में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। इस समय हमारा देश आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है अत: देश की एकता और अखंडता को बनाए रखना हम सभी का पुनीत कर्तव्य है। हमें देश के गौरव एवं सम्मान की रक्षा करनी है। इसके लिए राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता है। हमें देश के शक्तिबोध को पहचान कर उसे बढ़ाना है। कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे देश के मान-सम्मान को ठेस पहुँचती हो। हमें यह नहीं समझना चाहिए कि हम अकेले भला क्या कर सकते हैं। अकेला व्यक्ति भी देश के लिए बहुत कुछ कर सकता है। देश की प्रगति में हमें भी भागीदार बनना है।

देश के प्रति हमारा यह पुनीत कर्तव्य है कि हम देश के आदर्श नागरिक बनें। देश के शक्ति-बोध के विकास में हमारी भूमिका महत्त्वपूर्ण होनी चाहिए। हमें देश की कमियों को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताना चाहिए। देश के सम्मान की रक्षा करना हमारा प्रमुख कर्तव्य है। देश के सौंदर्य-बोध के प्रति भी हमें सचेष्ट रहना होगा। हम प्राय: देश की सुंदरता को बिगाड़ने के काम करते हैं। इससे देश की छवि बिगड़ती है। हमें हरसंभव प्रयास करना चाहिए कि देश का सौंदर्य बढ़े और विश्व के अन्य देशों की तुलना में श्रेष्ठ साबित हो सके।

भारत की सर्वांगीण उन्नति में हम सभी को भागीदार बनना होगा।

(ग) मोबाइल फोन की उपयोगिता

वर्तमान युग में मोबाइल फोन जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। आप जिधर भी देखें मोबाइल से फोन करते या सुनते हुए लोग नजर आएँगे। लगता है मोबाइल फोन के क्षेत्र में क्रांति-सी आ गई है। पिछले 4-5 वर्षों में मोबाइल फोन का जाल निरंतर फैलता चला जा रहा है। विभिन्न कंपनियाँ नित्य नए-प्रलोभनों के द्वारा लोगों को लुभाने के प्रयास में लगी हैं। नित्य नए ऑफर सामने आ रहे हैं। कई तो जीवन भर का साथ निभाने का वायदा कर रही हैं। आइए, इनके बारे में कुछ चर्चा कर लें।

मोबाइल फोन की उपयोगिता सर्वविदित है। अब न तो तारों का झंझट है और न फोन के पास बैठकर फोन करने या सुनने की बाध्यता है। अब तो आप कभी भी, कहीं से भी, किसी को फोन करके बात कर सकते हैं। अब न समय का बंधन है और न जगह का। आप बस में बैठे हैं, गाड़ी में जा रहे हैं, कहीं से भी कहीं पर संपर्क साधा जा सकता है। यह सभी प्रकार के लोगों के लिए उपयोगी है। यह व्यापारियों के लिए तो उपयोगी है ही, साथ ही कामगारों के लिए भी कम उपयोगी नहीं है। अब राज-मिस्त्रियों, प्लंबरों, इलेक्ट्रिशियनों, कलाकारों आदि सभी को इससे लाभ है। उन्हें इसकी सहायता से अधिक काम मिल रहा है। इन लोगों को काम के लिए बुलाना भी आसान हो गया है। अब इन्हें ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं रह गई है।

मोबाइल फोन के रंग-रूप, आकार और उपयोगिता के बारे में नित्य परिवर्तन आ रहे हैं। अब ये फोन बहुत ही आकर्षक और छोटे रूप में उपलब्ध हैं। इन्हें जेब में रखना भी सरल है। मोबाइल फोन से बातचीत करने के अलावा इनमें अन्य अनेक सुविधाएँ हैं। आप मोबाइल फोन से फोटो खींच सकते हैं, मनचाहा संगीत सुन सकते हैं, घड़ी का काम ले सकते हैं, दूसरों को संदेश भेज सकते हैं। आप इस पर अपने सभी फोनों का विवरण रख सकते हैं। जिस फोन को आप सुन नहीं पाए उसे मिस कॉल से पता करके उससे पुन: संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

प्रश्न 17. आपके क्षेत्र में सफाई कर्मचारी ठीक तरह से काम नहीं कर रहे हैं। अपने क्षेत्र में गंदगी एवं बीमारी फैलने की सूचना देते हुए नगर-निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए। (5)

उत्तर–

15/21, पीतम पुरा,
नई दिल्ली।
दिनांक : ....

सेवा में
क्षेत्रीय स्वास्थ्य अधिकारी,
दिल्ली नगर निगम, उत्तरी क्षेत्र,
सिविल लाइन, दिल्ली।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने मुहल्ले की सफ़ाई व्यवस्था की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इसे व्यवस्था के बदले कुव्यवस्था कहना अधिक उपयुक्त होगा। पिछले दस दिनों से यहाँ किसी सफ़ाई कर्मचारी के दर्शन नहीं हुए। पहले भी जो आते थे, वे सड़क का कूड़ा दाएँ-बाएँ करके चले जाते थे। अब तो मुहल्ला नरक बना हुआ है। नालियाँ बंद हैं, कूड़ेदान भरे पड़े हैं। दुर्गंध के मारे नाक में दम है। मक्खियों और मच्छरों का एकछत्र राज्य है। प्रत्येक घर में डेंगू और मलेरिया के मरीज हैं। अस्पताल के आँकड़े बताते हैं कि अब तक तीन मौतें हो चुकी हैं। कल एक को हैज़ा हो गया। वह अभी भी अस्पताल में मौत से जूझ रहा है। मैं जानना चाहता हूँ कि नगर निगम कब तक हमारे धैर्य की परीक्षा लेता रहेगा ?

आपसे निवेदन है कि इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दें अन्यथा हम समाचारपत्रों तथा संसद सदस्यों के माध्यम से मामला उच्च स्तर पर उठाएँगे, जिससे आपके विभाग की बदनामी होगी।

भवदीय,
शेखर सुमन

अथवा

प्रश्न 16. मित्र के जन्मदिन उत्सव में न पहुँच पाने का कारण बताते हुए उसे पत्र लिखिए।

उत्तर–

65–ए, सागरपुर,
नई दिल्ली।
दिनांक : 10 मार्च, 20.....

प्रिय मित्र अभिलाष,
सप्रेम नमस्कार।

मुझे तुम्हारे जन्मदिन उत्सव का निमंत्रण-पत्र यथासमय मिल गया था। मैंने उत्सव में सम्मिलित होने का कार्यक्रम निश्चित भी कर लिया था। लेकिन फिर भी मैं इस शुभ अवसर पर उपस्थित नहीं हो सका, इसका मुझे खेद है। वास्तव में जिस दिन मुझे यहाँ से चलना था, उसी दिन मेरी माताजी सीढ़ियों पर से गिर पड़ीं। घर के सभी सदस्य किसी अन्य समारोह में सम्मिलित होने के लिए गए हुए थे। घर में मैं और माताजी ही थे। मैं अपनी अटैची लगा रहा था कि अचानक कुछ गिरने की आवाज़ हुई। मैं बाहर आँगन की ओर गया तो देखा माताजी सीढ़ियों पर गिरी पड़ीं थीं। उनके सिर से खून बह रहा था। मैंने माताजी को उठाया और अस्पताल ले गया। उनके सिर में गंभीर चोट लगी थी। इसी कारण मैं चाहकर भी तुम्हारे जन्मदिन समारोह में सम्मिलित नहीं हो पाया। तुम मेरी स्थिति को भली प्रकार समझ सकते हो।

मैं तुम्हारे जन्मदिन की हार्दिक बधाई देता हूँ। ईश्वर तुम्हें स्वस्थ एवं सुखी रखे।

तुम्हारा प्रिय मित्र
सचिन